टिप्पणी- ४ अरब, २९ करोड़, ४० लाख, ८० हजार वा सुनकै चौंकवे कौ काम नांय। ये तौ अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक और उनके साहूकार गोपिन की लीला हैं। चेंटी कं और हाथी की खुराक में अन्तर क्यों है, याकौ कहा उत्तर? अरे भगवान् रस पीवे लग्यो तौ समय कौ कहा बन्धन? ये ४ अरब तौ थोड़ो समय है, मायिक जीवन कूँ समझायवे कूँ अन्यथा लीला अनादि व अनन्त है।

रास पञ्चाध्यायी भागवत् में "ब्रह्मरात्र उपावृते" अर्थ है ब्रह्माजी की रात जितनी बड़ी होय है, उतनी देर रास भयौ है देखौ प्रमाण में...

१. श्रीमच्छुकदेव कृत सिद्धान्त प्रदीप
२. श्रीधनपतिसूरि कृत भागवत् गूढ़ार्थ दीपिका
३. श्रीरामनारायण कृत भावाभाव विभाविका
४. श्रीमत् किशोरी प्रसाद विद्वत्कृत विशुद्ध रसदीपिका
५. श्रीमत् विश्वनाथचक्रवर्ती कृत सारार्थ दर्शिनी आदि

कुछ आचार्यन ने ब्रह्म श्रीकृष्ण की जितनी रात होय है - यह अर्थ कियौ है। या रीति सौं तो याऊ ते हजारन गुनों होय है, क्योंकि ब्रह्माजी की रात ते बड़ी विष्णु की फिर महाविष्णु की, फिर कहूँ ब्रह्म श्रीकृष्ण की, और कहाँ ताईं लिखें... पंडिताई ते कहा काम ! रस पीयवे ते गरज।।

रासेश्वरी राधिका नाचैं, मोहन वंशी रहे बजाय।।

शरद की फैली उजियारी
बहै यमुना लहरन वारी
कमल के फूल खिले भारी
सीरी ब्यार बहै होलै लैकैं सुगन्ध सुखदाय।
चौंतरा सोनें कौ तट पै
सबै वारूँ गिरिधर नट पै
चमक बिजरी पीरे पट पै
ठाड़ो तान भरैं मुरली में प्यारी के मन भाय।
बहुत रीझी स्यामा प्यारी
लगी नाचन लहंगा वारी
चुनरिया उड़ फहरै भारी
ताल मृदंग दुन्दुभी बाजै धा दिन ता किट धाय।
फिरावैं उंगरिन कौ गति में
नचावैं अँखियन को रस में
बतावैं भाव बहुत अंग में
रीझि-रीझि मोहन नें पकरी हँस-हँस कें लिपटाय।

नाचै-नाचै रे कन्हैया राधा रानी रही नचाय।।

हाथन ते हाथन कूँ पकरें
कबहू गलबैयां में जकरें
पीताम्बर औ फरियाँ फहरें
उड़-उड़ जावै पीरो पटुका साड़ी ते लिपटाय।
मोर मुकुट सिर पर फहरावै
शीश फूल झलमल झलकावै
मुख पै कारी लट लटकावै
बैजंती माला हरवा सों इरझ उरझ लहराय।
कोऊ सखियाँ ताल लगावैं
कोऊ बीना बैन बजावैं
कोऊ थेइ थेइ बोल सुनावैं
राधा माधव दैं फिरकैयां घूमैं ठुमका लाय।
ऐसे नांच रहे गिरिधारी
संग सजी वृषभानुदुलारी
मुसक्यावै मधुरै पिय-प्यारी
लीला रास मधुर देखन को लक्ष्मीहू ललचाय।।

ऐसो रास रच्यो वृन्दावन है रही पायल की झनकार।।

घुंघरू खूब छमाछम बाजैं
बजने बिछुआ बहुतै बाजैं
रवा कौंधनी केहू बाजैं
अंग-अंग में गहना बाजैं चुरियन की खनकार।
बाजे भांति भांति के बाजै
झाँझ प्रखावज दुन्दुभि बाजै
सारंगी और महुवर बाजै
वंशी बाजै मधुर-मधुर बाजैं बीना के तार।
राधा मोहन दै गलबैंया
नांचै संग-संग लैं फिरकैंयां
ब्यार चलै शीतल सुखदैया
जामा पटुका लहंगा फरिया करैं सनन सनकार।
मंडल रास बन्यो है अम्बर
ऐसे नांचै राधा गिरिधर
उड़ैं पखेरू मानों ऊपर
तारी दै सम देवैं बोलैं धा धा की धनकार।।

वृन्दावन रास रचायो री मनमोहन रास रचैया।
वंशीवट पै वंशी बजाई
सबके मनहि लुभायो री वंशी के बजैया।
सब गोपी घर-घर ते निकसीं
वंशी ने सब छुड़वायो री आई जहां कन्हैया।
क्यो तुम मात-पिता पति छोड़े
ऐसे वचन सुनायो री बलदाऊ के भैया।
सांची प्रीति घर नाय लौटीं
सबको रमण करायो री कल्प वृक्ष की छैंया।
मान देख कें छिप गयो कान्हा
बहुविधि रुदन करायो री आयो गाय चरैया।
कुंज कुंज यमुना तट ढूंढ्यो
नैनन जल बरसायो री चरनन की बलि जैया।
आयो श्याम लिपट गई गोपी
प्रीति रीति समझायो री रिनियां आप कन्हैया।
जितनी गोपी उतनेंइ कान्हा
मण्डल रास बनायो री नाचैं दैं गलबैंया।

दीपावली

दिवला भानु भवन में जुर रहे,
भीतर ज्योति जगामग होय।।
भांति भांति जुरे दीप री आली
कैसी सुन्दर आई दिवाली
सज के बैठी भानु की लाली
मन्दिर के भीतर की शोभा नाय बखाने कोय।
ढिंग बैठी सब सखी सहेली
बतरावै गलबैंयां मेली
गामन को पहचानें हेली
नन्दगाँव ये प्रेम सरोवर मैं दिखराऊं तोय।
ये है राधाकुण्ड गोवर्द्धन
चमक रहे सब ब्रज के गामन
कैसो दमक रह्यो वृन्दावन
ऊँची शिखर दिपै बरसाने देखो नैन संजोय।
ललिता कहै सुनहु सुकुमारी
देखो नंदगाँव यह प्यारी
मुसकाई सुन भानु दुलारी
देखत मगन भई हैं प्यारी तन की सब सुधि खोय।

गोवर्द्धन धारण

ब्रज में बादर पानी बरसै हरि गिरिराज उठायौ है।।

कार्तिक मास दिवारी आई
सुरपति पूजा घर घर छाई
दियौ हरि पूजन बन्द कराय
भोग गिरिवर कौ दियो लगाय
सहस भुजधारी रूप बनाय
दोहा-पर्वत पै बैठे प्रगट पावैं नाना भोग,
मुसक्यावैं श्री लाड़िली खूब बन्यो संजोग।
ग्वाल कहैं कान्हा ने सांचो देव जनायो है।।
यह सुन इन्द्र बहुत खिसियायो
मेघन को ये हुकम सुनायो
करो तुम ब्रज में पट्टाढार
जाय बरसो ह्वां मूसर-धार
बहुत गरवाये ब्रज के ग्वार
दोहा-तैंतिस कोटि देवतन कौ मैं स्वामी सुरराज,
पर्वत पूज्यौ,छोड़ि मोय,प्रलय करो तुम आज।

मेघवर्त जलवर्त उड़े अंधियारौ छायो है।।
बरसन लगे मेघ मदवारे
दुखी भये ब्रजवासी सारे
बीजरा चमकै बारम्बार
पड़ै बूँदन की भारी मार
गरज की घोर प्रलय की ब्यार
दोहा-तीखी बानन ज्यों लगैं बूँदन की बौछार,
बछरा गऊ ग्वाल-बाला सब विकल भई ब्रजनार।
कृष्ण-कृष्ण कह टेंरन लागे ब्रज घबरायो है।।
गोवर्द्धन की शरण गये सब
रक्षा की सोची प्रभु नें तब
अचक हरि गिरि को लियो उठाय
धर्‌यो बांये कर पै उचकाय
छिंगुलिया के नख पै गिरिराय
दोहा-ब्रजवासी भीतर गये दूर भये दुख-द्वन्द,
भूख प्यास सब मिट गई दरसन कर नन्दनन्द।
सब जल गिरि नें सोख्यो छींटा एक न आयो है।।

हरि कौ हाथ दबावै माई
लेय बलैंयां देव मनाई
मेरे लाला की करौ सहाय
लकुटिया ग्वाला देंय उठाय
जोर जयकार करैं हरसाय

दोहा-सात दिना तक जल पर्‌यो गिरि धार्‌यो नन्दनन्द
मारैं गूंठा इन्द्र को ग्वाल करैं आनन्द।
सात बरस के कान्हा ने ये इन्द्र हरायौ है।।

मेघन कौ जल खतम भयौ जब
हार मान कें लौट गये तब
कही सुरपति सों जाय हवाल
अनोखौ भयौ नन्द कौ लाल
नचैं ब्रज में सब गोपी-ग्वाल

दोहा-परिकम्मा दै पूजहीं गिरिवर को सज साज,
सुरपति चरनन में पर्‌यो क्षमा कियौ ब्रजराज।
ह्वै अनन्य हरि भजौ यही लीला अरथायौ है।।

------o------

गिरिवर धार लियो अँगुरी पै, सात बरस कौ रसिया।।

इन्दर ने जब जुलम गुजारे
भेजे बादर परलय वारे
बरसे ब्रज में मूसर धारे
पानी पानी अम्बर में बह उमगी नदिया।
बोल्यो लाला नन्द महर कौ
कछू काम ना नेक डरन कौ
धारूँ गिरिवर दुख हरन कौ
गिरि को लियो उखाड़ छत्र तान्यो ब्रजबसिया।
गिरिवर नीचे सब ब्रजवासी
गाय गोप गोपी सुखरासी
सींग दिखाय करैं सब हाँसी
नाचैं गावैं ढोल बजावैं बाजै बंसिया।
इन्दर हार पर्‌यो चरनन में
लै सुरभी आयो शरनन में
गोविन्द नाम भयो लोकन में
दै परिकम्मा पूजैं गिरिवर सब दुख नसिया।

गिरिवर गिर ना परै, सहारो सब देवो रे।

बारो सो है मेरो कन्हैया
छोटी बैयां नरम कलैयां
गिरिवर ना सम्हरै, सहारो सब देवो रे।
विकल भई है यशुदा रानी
सोच-सोच मन में पछतानी
मेरी कोई न पीर करै, सहारो सब देवो रे।
दौर श्याम के ढिंग है आई
हरि को हाथ दबावै माई
धीरज मन ना धरै, सहारो सब देवो रे।
मुसकावैं ठाड़े श्री गिरिधर
मैया हलको है यह गिरिवर
तू काहे फिकर करै, सहारो सब देवो रे।।

------o------

गो-चारण

मैया टीको कर रोरी कौ गऊ चरायवे जावै श्याम।।

ग्वाल बाला सब पौरी में
दरस की आसा है मन में
नन्द बाबा फूले तन में
कर सिंगार चले नन्दनन्दन रीझैं ब्रज की भाम।
सीस पै मोर मुकुट झूमैं
लटक कारी लट मुख चूमैं
अदा की चाल नयन घूमैं
लकुट हाथ औ कांधे कामर बनमाला अभिराम।
बजाई वंशी मोहन लाल
चले सब नाचत ब्रज के ग्वाल
दिये गलबैंया मदन गुपाल
फूली लता वृक्ष फूले फूल्यो वृन्दावन धाम।
चरैं गैयां सब कोमल पास
हिलोरे लेवैं जमुना पास
सबन कूँ कृष्ण चरण की आस
ऊपर मेघन की छाया में नांहि सतावै घाम।

चलहु श्याम अब गऊ चरायवे अब ताई तू सोवै है
बुरी टेव तोय परी नन्द के औगुन नये बखेरै है।।
घर-घर ते सब संखा संगाती आये तोय बुलावैं है
तू तौ सो रह्यौ अपनी नींदन हेला हेल मचावैं है
मात यशोदा तोय जगावै नेंकहु आँख न खोलै है,
बुरी टेव तोय परी नन्द के..।
बछरा सब नें ढील दिये औ गैया खड़ी रंभावैं है
घर-घर ते सब गोपी निकसीं पनियां भरवे जावै है
सदलौनी लै मैया ठाढ़ी उठ-उठ कें फिर सोवै है,
बुरी टेव तोय परी नन्द के..।
सदलौनी कौ नाम सुन्यौ तब उठ्यौ लाड़लौ बोलै है
दै दै मैया माखन मिसरी बहुत देर मोय होवै है
मात यशोदा गोद बिठारै आनन्द मंगल गावै है,
बुरी टेव तोय परी नन्द के..।।

------o------

सब उपनिषद तपस्या करके,ब्रज में आय बसे बन गाय
पहले ब्रह्मानन्द लयो इन
ब्रह्माकार वृत्ति प्रगटी तिन

अति तप किय ज्ञानिन के स्वामिन
रसमय ब्रह्म कृष्ण की लीला देखन को हुलसाय।
कृपा करी तब हरि रसदानी
कृष्णात्मा राधा ठकुरानी
युगल कृपा पाई मनमानी
गैया बन ब्रजवन में डोलैं घेरैं गोकुल राय।
ब्रज बारह वन बारह उपवन
बारह प्रतिवन बारह अधिवन
ये तो मुख्य हैं और गौण वन
वनवन प्रभु संग विहरैं हरि कूँ देखत रहैं रंभाय।
समझैं सब वंशी के भावैं
वंशी ते वन आवैं जावैं
वंशी ते जल पियैं नहावैं
युगल चरण रस युत ब्रज घासन आनन्द सों नित खाय।
वंशी सुन दृग आँसू ढारैं
चाटैं हरि के तन सुकुमारै
सहरावैं हरि रज कूँ झारैं
राधा रानी लेय दोहनी दुहैं श्याम सुख पाय।

बसंत

प्यारी आओ खेलैं आज,
ये ऋतु बसंत की आय गई।।

कैसो सुन्दर है वृन्दावन
देखत ही मोहै मेरौ मन
सरसों फूली सोहै खेतन
आयो है ऋतुराज ये ऋतु बसंत की आय गई।
सुन्दर ब्यार चलै सुखदाई
जमुना हू कैसी लहराई
कमलन की माला लै आई
पहरावन के काज ये ऋतु बसंत की आय गई।
ऐसी शोभा है मतवारी
आँखन में छाई है प्यारी
चलिये उठ कै भानुदुलारी
तज कै सबकी लाज ये ऋतु बसंत की आय गई।
खेली जाय बसंत बंधावन
डफ मुरली की घोर सुहावन
उड़त गुलाल घटा भई सावन
छायो है रसराज ये ऋतु बसंत की आय गई।।

बसंती रंग बरसैगो, आई-आई रे बसंत बहार।।

लौहरी सौत चलै मत इकली चूनर ओढ़ बसंती,
ये ब्रज है रसियन को अखारो तू है नई लजवंती,
श्याम रस पावैगो, आई-आई रे..।
लगी बसंत पंचमी ब्रज में मस्ती रही है छाय,
झूम-झूम के रसिया गावैं नाचैं कमर लचकाय,
देखत लै जावैगो, आई-आई रे..।
गोरी तेरी उमर है बारी ज्वानी को रंग भारी,
लाल गाल तेरे लाल होठ की लाली है मनहारी,
लाल तोपै रीझैगो, आई-आई रे..।
ब्रज की सूनसान गलियन में डोलै नंद को लाल,
जो कहूँ पावै कोई नवेली गालन मलै गुलाल,
खेल ऐसो खेलैगो, आई-आई रे..।।

------o------

धनि धनि बरसाने की लाड़ो।।

वश करि नंदगांव कौ कान्हा मिली अंक भरि गाढ़ो
अधर सुधा रस प्याय कुंवर को विरह सिंधु ते काढ़ो
रहत अधीन सदा पिय सनमुख कर जोरे है ठाढ़ो
युगल केलि गहवर वीथिन में प्रेम तरंगनि बाढ़ो।।

होरी माधुरी

कन्हैया रंग तोपै डारैगो सखि घूँघट काहे खौलै।।

पहली पिचकारी तेरे माथे मारै
बिंदिया की सुरंग बिगारैगो, सखि घूँघट..।
दूजी पिचकारी तेरे अँखियन मारै
काजर की रेख बिगारैगो, सखि घूँघट..।
तीजी पिचकारी तेरे मुख पै मारै
नथली की गूँज बिगारैगो, सखि घूँघट..।
चौथी पिचकारी तेरी छतियन मारै
चोली की चटक बिगारैगो, सखि घूँघट..।
पाँची पिचकारी तेरे घुटुमन मारै
लहंगा की घूम बिगारैगो, सखि घूँघट..।
छटी पिचकारी तेरे पांयन मारै
बिछुवन की घोर बिगारैगो, सखि घूँघट..।
साती पिचकारी तेरे सबरेई मारै
जोबन को फूल बिगारैगो, सखि घूँघट..।।

------o------

कान्हा पिचकारी मत मारै,चूनर रंग बिरंगी होय।।

चूनर नयी हमारी प्यारे
हे मनमोहन वंशी वारे
इतनी सुनलै नन्ददुलारे
पूछैंगी वो सास हमारी, कहाँ ते लई भिजोय।
सबकौ ढंग भयौ मतवारौ
दुखदाई है फागुन वारौ
कुलवंतिन कौ औगुन गारौ
मारग मेरो अब मत रोकै, मैं समझाऊँ तोय।
बहु विधि विनय करैं सुकुमारी
आड़े ठाड़े हैं गिरिधारी
बोलैं मीठे वचन बिहारी
होरी खेल अरी मन भाई,फागुन के दिन दोय।
छांड़ दई रंग की पिचकारी
हँस हँस के रसिया बनवारी
भीज गयी सबरी ब्रजनारी
ग्वालिन ने हरि कौ पीताम्बर छोर्‌यो मद में खोय।।

चूनरिया रंग में बोर गयौ कान्हा वंशी वारौ।।

चूनर नई बड़ी चटकीली
चटकीलौ रंग घोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
जान न पाई कित ते आयो
औचक ही झकझोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
गालन मल्यो गुलाल निरदई
घूँघट कौ पट छोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
बरजन लगी हाथ पकरे जब
बैंया तनक मरोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
लिपटन लग्यौ नन्द कौ मो ते
हियरे प्रेम हिलोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
खैंचा खैंची करकें छूटी
मोतिन की लर तोर गयौ, कान्हा बंशी वारौ।
ऐसौ रसिया कब मैं देखूँ
छोटो सो मन चोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।
होरी खेलन के दिन मोते
डोर प्रीति की जोर गयौ, कान्हा वंशी वारौ।।

छेड़ै रोज डगरिया में, तेरो ढीट कन्हैया मैया।।

बरस दिना याकी होरी होवै
पूछो सबै नगरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।
फागुन की तौ कहा बताऊँ
छांड़ै रंग घघरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।
भर भर फेंट गुलाल उड़ावै
करदे छेद बदरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।
ऊबट बाट अकेली घेरै
रोकै गली संकरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।
बैठ कदम पै वंशी बजावै
लै लै नाम बंसुरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।
भयो दिवानों फाग खेल जाय
देखो गली बजरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।
कैसे कोई बचैगी याते
डारै जाल मछरिया में, तेरो ढीट कन्हैया..।।

------o------

या में कहा लाज कौ काज, खेल लै होरी रंग भरी।
बरस दिना में होरी आई
रसिकन कौ ऐसी सुखदाई
मानो बूढ़े मिली लुगाई
मन की बतियाँ पूरी कर लै, नहि तो रहैं धरी।
ऐसो समय फेर नाय आवै
भागन ते फागुन रस पावै
नीरस देख-देख खिसियावै
सुनकैं निकर चली वह ग्वालिन मोहन नें पकरी।
लै गुलाल वाको मुख माड्यो
प्रेम बीज हियरे में गाड्यो
रंग बिरंगी करके छाड्यो
ऐसी दीख रही वह ग्वालिन जैसे फूल-छरी।
पीताम्बर हरि कौ वह पकर्‌यो
रंग भर्‌यो अपनो मुख पोंछ्‌यो
देखै श्याम प्रेम में जकर्‌यो
तबते नेह जुर्‌यो ग्वालिन कौ गौहन आय परी।।

हरि होरी कौ खिलार आयौ सब मिल घेरो री।।
बहुत बार याने मटकी फोरी
दीखै जहाँ सांकरी खोरी
सबरी घेरीं ब्रज की गोरी
या नें बहुतै कियो बिगार याकी वंशी चोरो री।
याद करो जब चीर चुरायौ
ऊपर चढ़ गूंठा दिखरायौ
सबन हाथ ऊपर जुरवायौ
ये कैसो ऊधमगार मिल पीताम्बर छीनो री।
आज हमारौ दांव बन्यो है
देखौ कैसौ आज सज्यो है
तिलक मुकुट ते खूब फब्यो है
ठकुराई लेओ निकार याकौ रंगन बौरौ री।
सब मिल पकरीं नन्द कौ लाला
मगन भईं ब्रज की सब बाला
मन की करी सबै तिहि काला
हंस देवैं गुलचा मार राख्यौ कर चेरौ री।

अरी होरी में है गयौ झगरौ, सखियन ने मोहन पकरौ।

धावा बोल दियौ गिरिधारी
नन्द गाँव के ग्वाला भारी
छांड़ रहे रंग की पिचकारी
निकसत में रिपटैं सबरौ, सखियन ने..।
सखियन के संग भानदुलारी
लै गुलाल की पोटैं भारी
मार रहीं हैं भई अंधियारी
ह्वां दीखै नाही दगरौ, सखियन ने..।
सखा भेष सखियन ने धार्‌यौ
सबही मिलकैं बादर फार्‌यौ
अचक जाय के फंदा डार्‌यौ
छैला कूं कसकैं जकरौ, सखियन ने..।
धोखौ भयो समझ गये मोहन
लाईं बरसाने की टोलन
हँस हँस आईं हरि के गोहन
गुलचन ते कर दियौ पतरौ, सखियन नें..।

मन भाई कर लीनी हरि ते
बतरावैं तीखी आँखन ते
सखि रूप कर दियो पुरुष ते
परमेश्वर कौ झरौ नखरौ, सखियन नें..।

------o------

मेरी अँखियन में निरदई, श्याम ने मारी मूठ गुलाल।

भई किरकिरी आँख हमारी
अचक आयकें घूँघट टारी
पूछन लग्यो कहा भयो प्यारी
मेरी अँखियन पे पीताम्बर मलन लगे गोपाल।
आँखन ते गुलाल काढ़ै वह
फूँक मार रस की बातें कह
चूमै नैंन हटाये हू रह
आग लगै होरी में ऐसो ऊधम ब्रज यहि काल।
या विधि नित ही होरी खेलै
रोकत टोकत ब्रज में डोलै
बिना बुलाए मीठे बोलै
ऐसी बात करै रस की सुन जियरा होय बिहाल।

नन्द महर कौ बड़ौ रसीलौ
नयौ फाग जोबन गरबीलौ
झूमक दै नाचै मटकीलौ
पाय अकेली संग न छांड़ै होरी के लै ख्याल।।

------o------

रंगीली होरी आई, धूम मची बरसाने।।

छैला दूलह आज बन्यौ है
सखा संग लै आय अर्‌यो है
रात दिना को खेल मच्यौ है
नगारिन जोरी आई, धूम मची बरसाने।
ढप बाजत सुन के ब्रजनारी
चाव भई खेलन की भारी
निकर परीं लै भानुदुलारी
रूप की घटा सुहाई, धूम मची बरसाने।
धाय चलीं बिन घूँघट मारै
मतवारी अंचरा न संवारै
अनवट और बिछुवन छनकारें
लगीं गावन सुखदाई, धूम मची बरसाने।

चढ़े ग्वाल जोवन मदवारे
नांचैं अखियन डोरा डारे
नेंक न मानैं बकैं उघारे
चली रंगन पिचकाई, धूम मची बरसाने।
लै हाथन फूलन की छरियाँ
लटक लटक के मारैं सखियाँ
सखा बचावैं लै फिरकैंयां
हार ग्वालन नें पाई, घूम मची बरसाने।
कह्यो श्याम ने सुनो रे भैया
बरसाने की चतुर लुगैया
फगुवा देवो घर बगदैया
जीत राधे पै छाई, धूम मची बरसाने।।

------o------

मेरे मुख पै अबीर, मेरे मुख पै अबीर,
कान्हा ने कैसी मारी।

ये मारी वो मारी हां मारी रे।।
कांहे की लै लई पिचकारी,
काहे को नीर, काहे को नीर, कान्हा ने..।

कंचन की लै लई पिचकारी,
रंगन को नीर, रंगन को नीर, कान्हा ने..।
लाज छोड़ मोय दीनी गारी,
कैसे धरूँ धीर, कैसे धरूँ धीर, कान्हा ने..।
नरम कलैया पकर मरोरी,
ऐसौ है बेपीर, ऐसौ है बेपीर, कान्हा ने..।
हार मेरो तोर्‌यो पकर लिपटाई,
मेरो फार्‌यो चीर, मेरो फार्‌यो चीर, कान्हा ने..।
बीरी लै मुख आप खवावै,
मारै नैनन तीर, मारै नैनन तीर, कान्हा ने..।
ऊधम पै हू प्यारो लागै,
अचरज मेरी बीर, अचरज मेरी बीर, कान्हा ने..।
अँखियाँ प्यासी रहैं रैन दिन,
देखन यदुवीर, देखन यदुवीर, कान्हा ने..।
लाख लोग नगरी बसैं,
सब लागै भीर, सब लागै भीर, कान्हा ने..।
रसिया बिना लगै सब सूनो,
छेदै शमशीर, छेदै शमशीर, कान्हा ने..।।

होरी खेलै तो आय जैयौ बरसाने छैला श्याम।।
मस्त महीना फागुन कौ सुन रसिया नन्दकुमार
मेरौ तेरौ नेह जुर्‌यो है जोवन धूँवाधार
तू साज बाज ते आय जैयो बरसाने छैला..।
इकलौ इकलौ जो खेलै तो गहवर मिलियौ लाल
रंग बिरंगे फूल तोरे कै मारूँ तेरे गाल
तू मन की हौंस बुझाय जैयो बरसाने छैला..।
बरस दिना है माखन खायो चोरी कर घनश्याम
देखूँगी वा दिन तोकूँ सूधी नाय ब्रज की बाम
तू अपनो जोर जमाय जैयो बरसाने छैला..।
डारूंगी मैं रंग वैजंती हरौ गुलाबी लाल
भर पिचकारी मारूँ तक-तक और उड़ाऊँ गुलाल
तू फगुवा लैकै आय जैयो बरसाने छैला..।
लठामार जो खेलै प्यारे संग में लैयो ढाल
तक-तक लठिया मारूँ उछर बचैयो तू नन्दलाल
सिर पगिया बांधे आय जैयो बरसाने छैला..।।

------o------

मैं कैसे होरी खेलूं री, मन मोहन मुरली वारे ते।।

ऊँची अटा पै रहन हमारी
नई-नई मैं घूंघट वारी
सबै करैं मेरी रखवारी
फाग मच्यो ढप बाजन लागे सुन लीनी पिछवारे ते।
होरी खेल रहे गिरिधारी
गीतन की धुनि लागै प्यारी
सबरी रात नचैं मतवारी
सुन-सुन मेरी पिंडुरी कांपै फुंदना लटक्यौ नारे ते।
जोबन की मदमाती सखियाँ
रंग रंग की पहरैं फरियाँ
सैन चलावैं रस की घतियाँ
होरी कौ रस लेवैं देवैं जुलमी औगुनहारे ते।
गली-गली में फाग मच्यौ है
रात दिना कौ खेल जम्यौ है
नीको छैला श्याम नच्यौ है
झमक जाय के नाचन लागीं नन्दलाल हुरियारे ते।।

अंगिया मैं का पै रंगवाऊँ री, रंगरेजा रंग नाय जानै।।

ऐसी अंगिया मैं रंगवाऊँ
वाय पहर होरी खिलवाऊँ
देखत ही रसियन बिकवाऊँ
फागुन खूब मनाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वा अंगिया में बाग लगाऊँ
बेला फूल चमेली लाऊँ
गूंथ-गूंथ के हार बनाऊँ
छैला को पहराऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वाई में रंगवाऊँ पपैया
पीउ पीउ की रटन लगैया
वा में पवन चलै पुरवैया
मोरन कूँ नचवाऊँ री रंगरेजा रंग नाय जानै।
वा अंगिया में महल रंगाऊँ
वा में पचरंग पलंग बिछाऊँ
गिलम गलीचा तकिया लाऊँ
वा में प्रियतम पाऊँरी रंगरेजा रंग नाय जानै।।

मेरे मन की समझै कौन जूझ रहे रेलापेली में।।
लोग यहाँ लाखन जुरे होरी के खिलवार
रस को मरम न जानही जानैं कहा गमार
चिपट जाय गुड़ की भेली में। मेरे मन की..
रुप देख सब कोऊ खिचैं जो घूँघट बिच होय
सांची प्रीति पतंग की तन मन डारै खोय
लिपट जाय अगिन नवेली में। मेरे मन की..
यह जोबन दिन चार कौ थोरे याके खेल
रसिया को रस जो पिये अमर होय यह बेल
रसिक क्यो बिक गयो धेली में। मेरे मन की..
गुड़ की भरी परात ते मिश्री की एक डरी
मोधू की सब रात बुरी छैला की एक घरी
धर्‌यो का ठेला ठेली में। मेरे मन की..
बाँको रसिया नन्द कौ बाँकौ वा कौ प्रेम
जाकौ जग फीको लगै सोई साधै नेम
चढ़ै गिरिधर की हवेली में। मेरे मन की..।।

------o------

होरी आई री बिरज में होरी आई री।
गैल गिरारे होरी है रही घर घर छाई री।।
अपनीअपनी जोट लाग ते सब कोई खेलैं फाग
बड़ौ अनोखौ नन्द महर को जोट न देखै लाग।
कोई खेलै छिरका छिरकी पिचकारी लै मार,
मोहन ऐसी होरी खेलै गागर सिर पै ढार।
रंग-रंग के लियो गुलालन मूठ मूठ रहे मार,
नन्द को ऐसो भयौ खिलारी भर-भर पोटैं मार।
कोई उझकै सैन चलावै घूँघट देय उघार,
नन्द को ऐसो है मदमातौ चोली देवै फार।
कोई छांड़ै हरो गुलाबी रंग बैजंती लाल,
श्याम रंग में भीतर बाहर रंग दीनी गोपाल।
सबै रंग मिट जावैं होरी के धोये एक बार,
श्यामरंग दिन दूनो निखरै धोऔ बार हजार।।

------o------

चढ़ के नन्द गाँव पै आई, गोपीं बरसाने वारी।।

नंद भवन घेर्‌यो है जाई
ऊपर चढ़ के छिपे कन्हाई
पकरी जाय यशोदा माई
कहाँ छिपाये कुँवर आपने बोलो महतारी।
हमें दिखाओ अपने लाला
किये लाल यशुदा के गाला
रंगन करीं महर बेहाला
दियौ बनाय यशोदा ऊपर ढूंढौ गिरिधारी।
ऊपर चढ़ पकरी मन मोहन
सब मिलके लागी हैं गोहन
गुलचा दिये कटीली भौंहन
कैसे आय छिप्यौ होरी में भड़ुआ बटमारी।
छीन लई मुरली पीताम्बर
दियो ओढ़ाय रंगीली चूनर
लहंगा फरिया मोतिन झालर
काजर बेंदी कमर कौंधनी करी एक नारी।

सब मिलि घूँघट मार नचावैं
यशुदा की छोरी बतरावैं
देख-देख सब हंसैं हंसावैं
यशुदा की गोदी बैठारी लाली है प्यारी।
मैया भेद समझ ना पाई
बहू श्याम की यह मन भाई
या आसा दुलरावै माई
चूमत समझ हंसीं सब गोपीं हंसैं देय तारी।।

------o------

होरी में कीरति ने समधिन जसुदा न्योत बुलाई है।।

कीरति ने अगबानी कीनी
कृपा हमें अपनी कर लीनी
बहुतै रस सुख सब कूँ दीनी
तुम तो नामी दाता तन मन सबहि लुटाई है।
एक बात सांची बोलो तुम
कृष्ण पिता वसुदेव सुने हम
कहां कियौ तुम उनसौं संगम
शंका भरी तुम्हारी बतियाँ समझ न आई हैं।

नंद महर सूधे हैं गोरे
पूत चोर लम्पट और कारे
मिले न कुल की रीति तिहारे
खोलो या को भेद गुपत कछु बात छिपाई है।
हम कूँ अपनो करि कें मानों
नन्दगाँव सोई बरसानों
नंद समान भानु कूँ जानों
बसौं भानु ढिंग सबै तिहारी रीति सुहाई है।
मुसकाईं सुन यशुदा रानी
हंस बोलीं रस मधुरी बानी
हमरी बात तुमनेइ बखानी
नन्दगाँव चल बसौ नन्द ने आस लगाई है।
हँसीं सबै बरसाने वारी
समधिन नहिं यह भोरी भारी
गावन लागीं मिलि सब गारी
बरसै रस बरसाने राधा कृपा जनाई है।।

------o------

गोरी बरसाने की गावैं गारी होरी में लै नाम।।
पहली गारी है जसुदा की
जाकौ पूत धूत चालाकी
रीति पिता सौं मिलै न जाकी
गोरे भोरे नंन्दराय पै पूत कहाँ ते श्याम।
दूजी गारी नंन्दराय की
अति चंचल घरवारी जाकी
दादी हू नहिं जात पांत की
देवमीढ़ बाबा क्षत्रिय ने करी बनेंनी भाम।
तीजी गारी बलदाऊ की
होरी में गति देखी जाकी
संग के हारे हुरियारन की
घोटा लगै भांग कौ ऊपर वारुणी छकै ललाम।
चौथी गारी गिरिधारी की
पितु वसुदेव सुनत मति थाकी
नंद घरनि माता है जाकी
पूत एक द्वै बाप सुने नहिं कुल के बिगरे काम।

निश्चय भयौ न कौंन बाप है
घर घर चोरी करन जात है
गोरिन घर मटकी चाटत है
माँगे भात नें मिल्यो फेर मागत न लाज हे राम
जमुना न्हावें गोप लली जब
वस्त्र खोल तट धरे नग्न सब
चीर चुराय चढ़े कदमन तब
बाहर नगन बुलाईं ऐसे बिगरे काम तमाम
सूने भवनन जाय ढिंढोरे
माखन चोर मटुकिया फोरे
लालच जीभ मात पित छोरे
झांकत डोलै पर नारिन कौ नंदगाँम बदनाम
नंदराय घर भर्‌यो रतन है
माथे पूंछ मोर धार्‌यो है
गुंजा की माला लटकत है
रस नहिं जानै गाय चरैया चोरी कौ है काम

हंस मुसकानै नन्द कौ लाला
तिरछी देख हसैं ब्रजबाला
बूंका बंदन उड़ै गुलाला
तरसैं देव देख ब्रज होरी आनंद आठों जाम।।

------o------

आज भोर बरसाने वारी आईं नन्दगाँव पै धाय।।
नन्द द्वार पै मिल्यौ पौरिया
पटक पछारी भरीं कौरिया
करी पिटाई भज्यो बौरिया
निधरक घुसीं नन्द मन्दिर में घेरी जसुदा माय।
पकर नचाई जसुदा रानी
कहाँ तिहारे दधि के दानी
होरी के रस में बौरानी
गावैं गीत फाग के प्यारे बकैं जोइ मन भाय।
नन्दभवन में शोर मचाई
मानों फौज बड़ी चढ़ि आई
ढूंढ रहीं सब जादो राई
हरि भाजे, हलधर हू भाजे, भाजे हैं नन्दराय।

ऊपर अटा चढ़े गिरिधारी
सखन नाम लै टेरैं भारी
आओ चढ़ आईं ब्रजनारी
टेर सुनत ग्वारिया भजे सब दौरे होड़ लगाय।
द्वारन मूंद रहीं ब्रज गोपी
प्रेम भरी हरि पै तब कोपीं
छीने बसन लाज सब लोपी
गुलचा दियौ कियौ मन भायौ फगुवा लियो धराय।।

------o------

कान्हा ते कैसे खेलूँगी होरी।।

सबरे ब्रज में धूम मचाई, लै मेरो नाम बकै होरी।
नई-नई मैंतो आई नवेली, कबहू न खेली ब्रज होरी।
होरी के हुरियारे छैला, जान न देवैं कोई गोरी।
कैसे बचेगी या होरी में, पीहर की चूनर कोरी।
पोटन भरे गुलाल छैल सब, लै-लै मांटन रंग घोरी।
ऐसी होरी जरै निगोरी, बाहर भीतर रंग बोरी।
होरी में बरजोरी करके, सबकी लाज मटकी फोरी।
रसियन के छल-बल नहिं जानूं, दाव पेंच में मैं भोरी।

सुन ब्रज के ठगैल मेरी छांड़ दै रे गैल,
ऐसी होरी तेरी कैसी होरी हाय मची।।

अबही तो मैं ब्रज में आई
या ब्रज रीति मैं जान न पाई
तोते जान ना पहिचान मैं हूँ नारी अनजान,
कैसे बीच डगर में फाग रची।
मैं हूँ बेटी बड़े घरन की
नयी ब्याहुली मैं लाजन की
मेरी चूनर छापेदार मेरी सारी जरतार,
हटो छांड़ो लंगराई मोहे नांय जची।
मोहन नैनन तीर चलावै
घूँघट चीर जिया बिंध जावै
मेरे नैनन तीर ऐसे लागे समसीर,
हटो चल्यो नहि जावै मेरी कमर लची।

------o------

बरसाने की गोपीं नन्दगाँव में होरी खेलन आईं।

नन्दगाँव पै टेर लगाई
नाचैं गावैं धूमस छाई
बाहर आवौ छैल कन्हाई
काहे छिपे भवन में गारी दिवाय आपनी माई।

मिलि भीतर ते लाईं मोहन
केशर मांट लगीं तब ढोरन
शीत लगै नहिं कहुं कोमल तन
आंचर ओट करैं हरि ऊपर रोहिणी जसुदा माई।

कहैं रोहिणी सुनहु किशोरी
नन्दराय पै रंग भरो री
मांगे देहु श्याम हमको री
मांगे ते जो मिलै, देहु होरी में हमें कन्हाई।

इतते सुबल राम सब छाये
रंग माट गोपिन पर नाये
गोरस लाय शीश ढरकाये
देत असीस चलीं ब्रजनारी फगुवा लै मन भाई।।

नै नै नित्य धाम बरसानो, श्याम जहाँ पै गारी खाय।।

अबलौं होरी नित नित होवै
अबलौं हरि नित गारी खावै
गारी सुन सुन हरि सुख पावै
एक एक गारी पै कोटि स्तुति आदर नहिं भाय।

गावैं रस में मिल ब्रजनारी
तुम अब सुनों लाल गिरिधारी
पूछौ तुम अपनी महतारी
गर्ग मुनी ने कैसे पितु वसुदेव बताये आय।

गाय चराय करी रसिकाई
दासी पै मन रहे लुभाई
तीन ठौर ते टेढ़ी पाई
आप त्रिभंग बहू वह कुबरी लीनी जोट मिलाय।

बड़ी खिलार भुआ है तेरी
कुंती ने सुत जायो क्वारी
सूरज ते कर लीनी यारी
पीछे ब्याह पाण्डु ते रोप्यौ धापी कैसेहू नाय।

ब्याही के कौतुक हैं भारे
बेटा पाँच भये बलवारे
पिता सबन के न्यारे-न्यारे
सात खसम कर लिये तऊ सतवंती रही कहाय।
सुनी सती एक भाभी प्यारी
पाँच पुरुष की एकै नारी
बीच सभा में भयी ऊघारी
अपनी नांक कटत जब देखी दौरे करी सहाय।
बहन फुफेरी जाय हरी तुम
बहू बनावत आई न सरम
धरम धींगरन के ये ऊधम
भूअन ते जाय सास कही तुम ऐसी करी हँसाय।
बहिन तिहारी क्वारी के ढंग
भजी सुभद्रा अर्जुन लै संग
भाई पति है यारी के रंग
वह यारी तुमने जुरवाई भारी गजबहि ढाय।
गारी सुनत श्याम मुसकाये
लै लै पोट गुलाल उड़ाये
गोपिन मुख पै मूठ चलाये
ये गारी सुनवे को हरि अबहू बरसाने धाय।।

आज रंगीली होरी रे रसिया ।।

साज सिंगार हाथ लठिया लै
घर घर ते चली गोरी रे रसिया।
जा दिन ते लगी बसंत पंचमी
ता दिन ते लगी होरी रे रसिया।
सोरह बरस की चौदह बरस की
कोई उमर की थोरी रे रसिया।
कोऊ आवै लपकत कोऊ आवै झपकत
कोई भौंह मरोरी रे रसिया।
लै लै ढाल चले नन्द गैंया
हरि हलधर की जोरी रे रसिया।
गली रंगीली लठामार भई
भजे ग्वारिया चोरी रे रसिया।
दिये छुड़ाय कृष्ण बलदाऊ
भानुलली बड़ी भोरी रे रसिया।।

------o------

जतन सौं राखियो हमारौ गिल्ली डण्डा।।

समधिन सौत छिनार कहावै
सोरह यार गरे लिपटावै
बत्तिस करके सैन चलावै डारै ठगनी फंदा।
समधिन सौत छिनार के नखरे
मोह लिये सुर नर मुनि सिगरे
बड़े-बड़े तपधारी मोहे बाबाजी मुछमुण्डा।
समधिन सौत छिनार रसीली
याकी तिरछी भौंह कटीली
भीतर लै बाहर भरमावै ये ही याको धन्धा।
समधिन सौत छिनार है गन्दी
खसम अनेक किये छरछंदी
बूढ़े वर ते झिकीं न सब जग किये रंड के भण्डा।
समधिन सौत छिनट्टी डोलै
छोड़े नाय कोई बिन बोलै
पंडितं को खंडित कर डारे और पुजारी पण्डा।

समधिन सौत छिनार बेसरम
रांत दिना करवावै कुकरम
तीन रंग की चोली पहरे गली-गली फरसण्डा।
समधिन सौत छिनार उचंगी
पहरी औढ़ी तौहू नंगी
राजा ते भंगी तक याके यार बने मुस्तंडा।
समधिन सौत है जादूगरनी
छिन-छिन रंग और रूप बदलनी
समधी ने ऐसी धर दाबी जन दियो भारी अण्डा (सब ब्रह्मंडा)।

------o------

रंग मत डारै रे अरे साँवरिया।।

साँवरिया होरी के खिलार, रंग मत डारै..।
मेरी सास बड़ी लड़हारी रे सुन साँवरिया,
मेरी ननदी फरिया फार, रंग मत डारै..।
मेरे तो बलम की रीति बुरी सुन साँवरिया,
वो हरदम रखै कटार, रंग मत डारै..।
मेरे ससुर की मूंछ बड़ी है साँवरिया,

वो तो लम्बी छल्लेदार, रंग मत डारै..
सवा लाख की मेरी चूनर साँवरिया
मेरी साड़ी तो जरतार, रंग मत डारै..
तेरी कमरिया को कहा बिगरैगो साँवरिया
जब चाहे झरकार, रंग मत डारै..।

------o------

खेलो-खेलो रे साँवरिया होरी संभर-संभर के आज।
हारे तुम होरी खेलत कल गये यहा ते भाज
फिर होरी खेलन को कैसे तुम आये महाराज
टेढ़ी चाल मुकुट टेढ़ो टेढ़ी चितवन सब साज
सूधौ तुम्हें आज हम करिहैं तुम छलियन सरताज
होरी में तुम गारी गावत गारी तुम को छाज
द्वै बापन के बारे याते कारे तुम्हें न लाज
बांस बंसुरिया पोली-पोली वा पै इतनों नाज
लठामार में टूटैगी बैरिन अधरन रही गाज
बतरावन में पकर लियौ झपटीं जैसे सब बाज
नारि साँवरी करके नचवत होरी भरे समाज।

मेरी सास लड़ै मेरी ननद लड़ै
तेरी कैसी पड़ गई लाग।।

रोज-रोज तेरी होरी औ बरजोरी में दै दऊँ आग।।
कोई नवेली घूँघट मारे घूँघट उझकै आय,
कैसे निकसें बकै उघारे हेला हेल मचाय।
गलियन-गलियन फेरा देवै रोकै टोकै झगरै,
लपटै झपटै फरिया फारै मोतिन मांग बिखेरै।
छोड़ूँगी मैं ब्रज कौ बसिबौ ह्यां की रीति अनीति,
गोरे गालन पै पिचकारी छतियन कौ बन्यौ मीत।
पहले भरे गुलाल आँख में पीछे काढ़ै आय,
फूँकै आँख रसीली फूँकन निरखै रूप अघाय।
पहले ऊधम करै अनौखे पीछे जोरै हाथ,
पैंया परै रसीली बतियन और नवावै माथ।
कौन बिकैगी नार नवेली ऐसी बानन देख,
जोबन नयो रसीलो मोहन उठत कछुक मुख रेख।

ठाड़ी अपनी अटरिया पै गारी दै गयो दैया।।

लै-लै मेरो नाम करी मोकूँ बदनाम
कैसे छोड़ूं नन्दगाँव मेरी मैया।
आवै है अंचम्भो मेरो नाम कहाँ ते जान्यो
नई-नई आई में लुगैया।
गारी जो सुनाई और मंद मुसकाई
मेरे है गई पार नजरिया।
मीठी-मीठी गारी दैकें सब कुछ हर लियो
होरी गावै जसुदा को छैया।
ऐसी बुरी होरी आई जामें गारी मन भाई
कुल की लाज नसैया।
देखत सरम आवै देखे बिन न रहावै
है कोई गैल बतैया।
अटा चढ़ूं बार बार कर बहानों हजार
तऊ अब होय हँसैया।।

------o------

होरी खेलैं राधा यदुवीर, बिरज में हरररररर।
रंगन बरसै नीर बिरज में झरररररर।।
इतते कान्हा धूम मचाये
हुरियारे सब संग में लाये
फेंटा कस-कस फाग जमाये
उछर-उछर के नाच दिखाये
होरी गाय रहे भई भीर बिरज में अरररररर।
उत ते आईं राधा प्यारी
संग में हुरियारीं मतवारी
कसके कमर करी तैयारी
गूँठा मार नाच रहीं प्यारी
गारी गाय रहीं तज धीर बिरज में गरररररर।
गोरी-गोरी जसुदा मैया
गोरे बाप और गोरे भैया
काहे कारे भये कन्हैया
कहा मरम की बात है दैया
कहाँ खाईं जसुदा खीर बिरज में खरररररर।

नाम गरग ने तेरे धराये
त्यारे पितु वसुदेव बताये
नन्दराय जसुदा को ब्याहे
जसुदा कंह वसुदेव को पाये
वो तो रहें जसुदा के तीर बिरज में तररररर।
प्रीती करत तुम देओ गारी
गोरी तुम सब मन की कारीं
कारे नैनन रेखा कारी
हाव भाव चितवन की कारी
कारी बेनी त्यारे सीर बिरज में सररररर।।

------o------

राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं।
नंदलाल ब्रजबाल होरी खेलैं।।

बरसाने में पकरि कृष्ण को छीन पीताम्बर छीनी मुरली
भर पिचकारी गालन मारी नैनन मारी छतियन मारी
सररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं..।
अँखियन में कजरा जु लगायो रंगबिरंगो भड़ुवा कर दियौ

फगुवा लै कें गुलचा मारै बोली ऐयो फिर खेलन कूँ
अररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं..।
छूट के आये ह्यां मनमोहन खीजीं सब ग्वालन की टोलन
भर-भर पोट लदे अपने सिर रहे उड़ाय अबीर की झोरन
झररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं..।
लाल भईं सब गोपी जमुना लाल भये सब बादर लाल
लाल चूनरी लालइ सारी लाल भई मुतियन की माल
लररररररर, राधा नव ब्रजबाल होरी खेलैं..।।

------o------

होरी की मौज आई ऐ श्याम चले आओ।

मैदान फाग का है, तुम जोर आजमाओ।।
तू है सजीला रसिया, मैं हूँ नवेली गोरी,
दोनों के जंग में तुम, अपना हुनर दिखाओ।
चोरी से रंग डाला, कल भाग जो गये थे,
कर लूं तमन्ना पूरी, यारा जरा रूक जाओ।
रुसवा करूंगी तुझको, रसिया मैं बीच महफिल,
माशूका तू मैं आशिक, यूं गांठ तो जुड़वावो।।

साँवरिया होरी खेलन आयौ बरसाने में होरी।।

कृष्ण कहें तुम सुनो सखाऔ रहियौ चौकस जोरी
पकरैंगी ये चतुर बहुत हैं जानों ना इन्हे भोरी
भर पिचकारी छोड़ौ इनपै रहै न चूनर कोरी
होरी गाओ रंग जमाओ भानु-भवन की पौरी
खेल भयो रंग होरी कौ सब केसर रंग लै घोरी
भर-भर पोट गुलाल उड़ावैं मारैं भर-भर झोरी
ढोलक झांझ बजै ढफ महुवर और नगारे की जोरी
साँवरिया की वंशी बाजै नाचैं राधा गोरी
नाचत में लई पकर श्याम कौ गोपिन ने कियौ चोरी
लंहगा फरिया अंगिया लै छोरा ते कर दियौ छोरी
दियौ बनाय सांवरी दुलहन मुख पै घूंघट थोरी
दूलह भेष कियौ राधे को कर दियो है गठ जोरी
ब्याह कियो होरी की गारिन लोक लाज सब तोरी
गौने चार कियौ गहवर वन चिरजीयौ यह जोरी।।

------o------

होरी में काहे भागै अरे लगवाय लै,
कजरा नंद जू के।।

काजर तोय लगाऊँ ऐसो
तिलक लगावै सज के जैसो
छैला अपनो साज आज सजवाय लै, ढोटा नंद..।
तिरछी चाल चलै ऐंडातो
सबरे ब्रज डोलै मदमातो
ऐंठो डोलै सबरी ऐंठ झराय लै, छोरा नंद..।
बहुत दिना तक मटकी फोरी
बहुतै करी तैनें माखन चोरी
अपनी सबरी करनी को फल पाय लै, लाला नंद..।
भर-भर डारूं रंग को गड़ुवा
तोय करुं होरी को भड़ुवा
बन्यो ठन्यो डोलै रसिया रस पाय लै,लाड़ले नंद..।

------o------

मैं तो होरी खेलन जाऊंगी, नांय मानै मेरो मनुवा।।

होरी को अलबेलो छैला
मैंतो वाते नेह लगाऊंगी, नाय मानै..।

भर पिचकारी रंग की मारुं
अबीर गुलाल उड़ाऊंगी, नाय मानै..।
ऐसो रंग डारूं कारे पै
गोरो आज़ बनाऊंगी, नाय मानै..।
दै गुलचा सूधो कर डारूं
सबरी टेड़ निकारूंगी, नाय मानै..।
चीर हरन को बदलो लूंगी
पीताम्बर छुड़ाऊंगी, नाय मानै..।
हरि को नंगो कर होरी में
नैनन नैन लड़ाऊंगी, नाय मानै..।।

------o------

रंग चतुर गुजरिया डार गई री।।

मटकी उचवे को मोय टेर्‌यो
झालो मार बुलाय गई री, रंग चतुर..।
मटकी ते मैनें हाथ लगायो
गगरी मोपै ढुराय गई री, रंग चतुर..।
घूंघट में लगी भोरी भारी
गूंठा मार दिखाय गई री, रंग चतुर..।।

होरी गये रंग डार्‌यो रे काहे नन्दलाला।।

फागुन गयो गई धूरेणी,
अब तैने गड़ुआ ढार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
जुलम करै तेरी मति बौराई,
ऐसौ ढंग संवार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
तेरे लोक लाज ना नेंकहु,
कारो सब कछु हार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
आप भयो बदनाम बिरज में,
गलियन नाम निकार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
मेरी बात चलेगी घर-घर,
घूँघट मेरो टार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
ब्रजराजा कौ बेटा ह्वै के,
अपनो नाम बिगार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
घर-घर चोरी करै निसरके,
चोर नाम यह धार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
ब्याही अनब्याही परनारी,
नेंकहु नाय बिचार्‌यो रे काहे नन्दलाला।
औगुन भर्‌यो श्याम तौहू ब्रज,
सगरो यापै वार्‌यो रे काहे नन्दलाला।

पनघट माधुरी

गोपिन की लागी भीर, पनघट प्यारो लगै।।

ब्रज की गौरी चली जुरि मिल कैं,
पीछे लग्यौ बलबीर, पनघट प्यारो लगै।
एक पनिहारी दूजी ते बोली,
कैसे बचूँ मेरी बीर, पनघट प्यारो लगै।
नंद जू कौ छौना पीछे पर्‌यो है,
नैना के मारै हँस तीर, पनघट प्यारो लगै।
चुभ-चुभ जावै वाकी काजर रेखा,
मेरी अँखियन छलकै नीर, पनघट प्यारो लगै।
पायन छाया मुकुट छुवावै,
छाँह करै लै चीर, पनघट प्यारो लगै।
मो पै पानी वारै पीवै,
कैसे धरूँ मैं धीर, पनघट प्यारो लगै।
नैनन ही में हा हा खावै,
बहुत दिखावै पीर, पनघट प्यारो लगै।

कबहू जोरै हाथ गरज ते,
देखत होय अधीर, पनघट प्यारो लगै।
प्रेमी रसिया के फंदन ते,
बचवो टेढ़ी खीर, पनघट प्यारो लगै।।

------o------

कहां जाऊं कहा करूं गिरिधर अटकै।।

गगरी भरन पनघट पै गई
गगरी फोर दई चूनर भिजई
भीजी भीजी कैसे आऊं चटकै मटकै।
दही बेचवे घर ते निकसी
दही लूट लई मटकी फोर दई
कैसौ नयौ भयौ दानी दुलरी झटकै।
सांकरी गली में मैं जाय रही
मोय घेर लई मोय गैल न दई
कैसौ कारो मन कौ लपटै झपटै।
हार मेरो तोर्‌यो पकर के खैंच्यो
बरजोरी करी मैंतो लाजन मरी
कैसे कहूं कौन सुनै कौन याको हटकै।।